

سفیر ایران در هند در گفت‌وگو با روزنامه Navbharat Times:

## تهران نباید در چرخه «جنگ-مذاکره-جنگ» گرفتار شود

سفیر ایران در هند با بیان اینکه ایران آغازگر جنگ نبوده است؛ گفت: ایران نباید در چرخه «جنگ، آتش‌بس، مذاکره و جنگ» گرفتار شود و تهران گرچه برای هر دو سناریوی جنگ و صلح آمادگی دارد، اما صلحی پایدار را ترجیح می‌دهد.

کد خبر: ۱۵۴۹۷۲۸

تاریخ: ۰۵ اردیبهشت ۱۴۰۵ - ۱۶:۲۰

به گزارش جام جم آنلاین، «محمد فتحعلی» سفیر جمهوری اسلامی ایران در دهلی‌نو، در گفت‌وگو با روزنامه Navbharat Times به تشریح مواضع تهران درباره تحولات اخیر منطقه، مذاکرات، پروژه چابهار و امنیت دریایی پرداخت.

سفیر ایران در هند با اشاره به وضعیت آتش‌بس و مذاکرات تأکید کرد که ایران هرگز آغازگر جنگ نبوده، اما در صورت وقوع جنگ، پایان آن را در اختیار خود می‌داند و تهران همچنان از مسیر دیپلماسی حمایت می‌کند، اما بازگشت به مذاکرات مستلزم به رسمیت شناختن حقوق هسته‌ای ایران، ارائه تضمین برای عدم حمله مجدد و جبران خسارات وارده است. پ

فتحعلی همچنین هشدار داد که ایران نباید در چرخه «جنگ، آتش‌بس، مذاکره و دوباره جنگ» گرفتار شود و تأکید کرد که تهران برای هر دو سناریوی جنگ و صلح آمادگی دارد، اما صلحی پایدار را ترجیح می‌دهد.

وی در بخش دیگری از این گفت‌وگو، با اشاره به اهمیت پروژه‌های اقتصادی، به‌ویژه بندر بندر چابهار، اظهار داشت: این‌گونه همکاری‌ها نباید تحت تأثیر تحریم‌های یک‌جانبه قرار گیرند. او چابهار را پروژه‌ای راهبردی با اهمیت منطقه‌ای و بین‌المللی توصیف کرد که نقش مهمی در اتصال هند به آسیای مرکزی دارد. به گفته وی، همکاری‌های ایران و هند در این زمینه ادامه دارد و تهران بر تقویت این روند، مستقل از فشارهای خارجی، تأکید دارد.

سفیر ایران همچنین در واکنش به نگرانی‌های هند درباره امنیت کشتیرانی در تنگه هرمز، تصریح کرد: ایران به اصول آزادی دریانوردی و ایمنی دریایی پایبند است، اما اجرای این اصول باید با احترام به حاکمیت ایران همراه باشد. او مسئولیت هرگونه ناامنی در این آبراه را متوجه آمریکا و رژیم صهیونیستی دانست و افزود که هند از جمله کشورهایی است که امکان عبور کشتی‌هایش از تنگه هرمز فراهم شده و این روند ادامه دارد. به گفته وی، حادثه اخیر مربوط به یک کشتی هندی نیز در دست بررسی است.

فتحعلی با اشاره به ریاست هند بر گروه بریکس، نقش دهلی‌نو را در ایجاد اجماع و تقویت ثبات منطقه‌ای مهم ارزیابی و تاکید کرد که ایران از هر ابتکاری که به همگرایی و احترام متقابل میان کشورها منجر شود، حمایت می‌کند و معتقد است بریکس می‌تواند نقش موثرتری در این مسیر ایفا کند.

وی درباره راهکارهای دستیابی به صلح پایدار نیز گفت: اتکا به آتش‌بس‌های موقت کافی نیست و باید ریشه‌های بحران مورد توجه قرار گیرد و توقف درگیری‌ها باید با سازوکارهای قابل راستی‌آزمایی و تضمین‌های مشخص همراه باشد تا از تکرار جنگ جلوگیری شود.

سفیر ایران در پایان به اقدام اخیر محمدباقر قالیباف، رئیس مجلس شورای اسلامی در سفر به اسلام‌آباد اشاره کرد و گفت: بردن وسایل دانش‌آموزان شهید مدرسه میناب، پیامی انسانی و اخلاقی برای جامعه جهانی داشت و ایران با این اقدام خواستار توجه جهانی به رنج کودکان قربانی جنگ و ضرورت پاسخگویی عاملان این جنایات شده است.



## चाबहार प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध

पश्चिम एशिया के युद्ध में अभी सीजफायर है, लेकिन दुनिया युद्ध के बीच इस असहज ठहराव की पतली लकीर पर टिकी है। ऊर्जा संकट के बीच भारतीय जहाज पर फायरिंग की घटना ने भारत की नींद उड़ा दी थी। इन सभी मसलों पर ईरानी राजदूत डॉ. मोहम्मद फाहली से बात की अल्पयू सिंह ने।

**Q** अमेरिका ने सीजफायर बढ़ाया, फिर भी ईरान की तरफ से आगली बातचीत के लिए साफ संकेत नहीं दिख रहा है। बातचीत फिर से शुरू करने के लिए क्या शर्तें हैं?

ईरान हमेशा कहता रहा है कि हमने कभी युद्ध नहीं चाहा और हम कभी युद्ध से युद्ध शुरू कभी नहीं करेंगे। लेकिन अगर युद्ध शुरू हो ही जाता, तो उसका अंत कैसे होगा, ये ईरान तय करेगा। बातचीत तभी सही तरीके तक पहुंच सकती है, जब विरोधी शक्तिपूर्ण मकसद के लिए हमारे परमाणु ऊर्जा के इस्तेमाल के हमारे हक को औपचारिक तौर पर मान्यता दे। उन्हें हमारे खिलाफ हर तरह की सैन्य कार्रवाई पर रोक लगाने का भी वादा करना होगा। इसके साथ ही हमारे देश को जो नुकसान पहुंचाया गया है, उसकी भरपाई भी करनी होगी। एक मनबूत व स्वतंत्र ईरान को स्वीकार करना होगा। एक साल से कम समय अंतराल में मैं दो युद्धों के अनुभव ने हमें सिखाया है कि 'युद्ध-सीजफायर-बातचीत-फिर युद्ध' के चक्र में फंסना ठीक नहीं है। मौजूदा वक़्त में अभी हम युद्ध और शांति दोनों के लिए तैयार हैं। लेकिन हम ऐसी शांति चाहते हैं जो टिकाऊ हो ऐसा सीजफायर नहीं जिसे दुश्मन फिर से संगठित होने और ताकत इकट्ठा करने के अवसर की तरह इस्तेमाल कर ले।

**Q** भारत इस साल विकास की अध्यक्षता कर रहा है। ऐसे वक़्त में पश्चिम एशिया को लेकर राम्रू में अलग अलग सुर है, आमसहमति और सकारात्मक भूमिका को ईरान कैसे देखता है?

ईरान भारत को ना सिर्फ एक जिम्मेदार और महत्वपूर्ण ग्लोबल खिलाड़ी के रूप में देखता है। BRICS के अध्यक्ष के तौर पर भी भारत को लेकर हमारा यही मानना है। हम हर उस पहल का स्वागत करते हैं जो सहयोग, आपसी सम्मान और क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा दे।

**Q** होर्मुज़ में भारतीय जहाजों पर फायरिंग की घटनाओं को लेकर भारत सरकार ने गहरी चिंता जताई है। ईरान भारतीय जहाजों की सुरक्षा को लेकर भारत सरकार को किस तरह का भरोसा देता है?

ईरान हमेशा से नेवीगेशन और समुद्री सुरक्षा (मेरिटाइम) के सिद्धांतों का सम्मान करता आया है। लेकिन होर्मुज़ स्ट्रेट में इन सिद्धांतों का पालन तभी मुमकिन है, जब तटीय देश होने के तब ईरान की संप्रभुता और संप्रभु अधिकारों का सम्मान किया जाए। हम यह साफ करन चाहते हैं कि इस अहम जलमार्ग में किसी भी तरह की रुकावट, अपसुरक्षा या खतरे की जिम्मेदारी अमेरिका और जपोनिस

रक्षक की है। उन्होंने हमारे देश के खिलाफ मैरिटाइम और आपराधिक युद्ध शुरू कर क्षेत्रीय स्थिरता और अंतरराष्ट्रीय समुद्री सुरक्षा को गंभीर खतरे में डाला है। ये पूरा चार्टर के मूलभूत सिद्धांतों के खिलाफ है। ध्यान देने वाली बात है कि भारत उन पांच देशों में शामिल है, जिन्हें हमने ऐलान के मुताबिक, शुरूआत में ही इस स्ट्रेट से गुजरने की इनामत दी थी। कई भारतीय जहाज पहले ही यहां से गुजर चुके हैं और जहाज भी आने वाले दिनों में यहां से गुजरेंगे। जहां तक कुछ दिन पहले जिस भारतीय जहाज के संबंध में घटना हुई थी, उसके ब्योरे की जांच ईरान की संबंधित अथॉरिटी से अभी जारी है।

**Q** बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव और प्रतिबंधों के बीच, चाबहार पोर्ट जैसे प्रोजेक्ट्स का भविष्य ईरान कैसे देखता है?

हम मानते हैं कि चाबहार जैसे आर्थिक और विकास से जुड़े सहयोग अहम प्रोजेक्ट्स, किसी एकतरफा नीति या मैरिटाइम प्रतिबंधों से प्रभावित नहीं होने चाहिए। चाबहार पोर्ट एक रणनीतिक और अंतरराष्ट्रीय महत्व का प्रोजेक्ट है, जो क्षेत्रीय कनेक्टिविटी बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है। भारत के लिए मध्य एशिया तक पहुंच बनाने के लिहाज से ये अहम है। हम इस प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। इस सहयोग का फायदा सिर्फ ईरान और भारत को नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र के देशों को मिलेगा। इसी संदर्भ में, ईरान लगातार भारत के साथ बातचीत, परामर्श और समन्वय बनाए हुए है। इस क्षेत्र में सहयोग जारी है। हम चाहते हैं कि ये संबंध और मजबूत हो और बाहरी दबाव इन पर असर ना डाल पाए। प्रोजेक्ट बिना रुकावट आगे बढ़ेगा।

**Q** ईरान के मुताबिक अस्थायी सीजफायर से आगे बढ़कर, स्थायी शांति के लिए क्या समाधान जरूरी है?

स्थायी शांति और स्थिरता के लिए सिर्फ सीजफायर काफी नहीं है। असली समाधान तभी संभव है जब संकट की जड़ को खत्म किया जाए, ना कि सिर्फ उसके लक्षणों को। जरूरी है कि युद्ध पूरी तरह बंद हो। मनबूत और भरोसेमंद व्यवस्था बनाई जाए, ताकि क्षेत्र में भविष्य में फिर से युद्ध न हो।

**Q** इस्लामाबाद यात्रा के दौरान मोहम्मद गालिबाफ गिनाव में गारे गए बच्चों के सामान साथ ले गए थे। क्या संदेश देना चाहते थे?

इस प्रतीकात्मक कदम का एक साफ मानवीय और नैतिक संदेश था, हम इन मासूम बच्चों को कभी नहीं भूलेंगे। ये बच्चे युद्ध के असली शिकार हैं, और उनकी याद दुनिया के सामने रहनी चाहिए। हम दुनिया को यह याद दिलाना चाहते हैं कि युद्ध की सबसे बड़ी कीमत मासूम लोग चुकाते हैं।

